राजस्थान

इतिहास

ब्रह्मास्त्र

सभी प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए रामबाण पुस्तक

प्रामाणिक पुस्तकों पर आधारित

41 जिलों के अनुसार

शॉर्ट नोट्स पर आधारित

प्रकाशक

Apni Padhai Publication

प्रकाशक:-

Apni Padhai Publication

सिद्वमुख मोड, राजगढ (चूरू)

- Apni Padhai
- Apni Padhai
- 7568716768

© प्रकाशकाधीन

मूल्य - ₹ 100 /-

इस पुस्तक के किसी भी भाग को प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना छापना या किसी इलेक्ट्रोनिक माध्यम से फोटोकॉपी, PDF, रिकॉर्डिंग या अन्य किसी विधि से वितरण नहीं किया जा सकता है, इसके सर्वाधिकार प्रकाशक के पास सुरक्षित है

इस पुस्तक को तैयार करने में पूर्ण सावधानी बरती गई है पुस्तक में दिये गये तथ्य व विवरण उचित व विश्वसनीय स्रोतों से प्राप्त किये गये हैं, फिर भी इसमें किसी प्रकार की त्रुटि, गलती, कमी के लिए लेखक, प्रकाशक, सम्पादक, मुद्रक, विक्रेता जिम्मेदार नहीं होगे। आप उक्त शर्ते मानते हुए ही यह पुस्तक खरीद रहे है

Apni Padhai Publication

भूमिका

प्रिय विद्यार्थीयों,

मैं आप सभी का तहेदिल से आभार प्रकट करता हूँ कि आपके अटूट विश्वास व आपके प्रेम से राजस्थान इतिहास ब्रह्मास्त्र पुस्तक के प्रथम संस्करण की शानदार सफलता के बाद इस पुस्तक का द्वितीय संस्करण आपके समक्ष प्रस्तुत है। यह पुस्तक नये जिलों अनुसार शॉर्ट नोट्स पर आधारित है जहाँ से आपको प्रतियोगी परीक्षा में सीधे सवाल देखने को मिलेंगे, इस पुस्तक में वहीं सामग्री समाहित की गई है जो "Examiner" पूछता है।

जो बातें प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए महत्वपूर्ण नहीं है उन्हें पढकर आपका समय व्यर्थ ना हो इस बात का ध्यान रखा गया है व सभी महत्वपूर्ण तथ्य जो परीक्षा के लिए उपयोगी है उन्हें इस पुस्तक में सरल भाषा में शामिल किया गया है। यह पुस्तक स्पष्टता और संक्षिप्तता के प्रति हमारे सामूहिक प्रयास और प्रतिबद्धता का प्रमाण है।

मुझे आशा है कि राजस्थान इतिहास की यह ब्रह्मास्त्र पुस्तक प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए रामबाण साबित होगी।

मैं ईश्वर को धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने मुझे यह किताब लिखने की शक्ति दी, मैं यह पुस्तक अपने माता-पिता, पत्नी नीलम व बेटी परिधि को समर्पित करता हूँ जिनके हिस्से के समय को चुराकर मेने यह किताब लिखी है, साथ ही अपने सहयोगी A. K. सर (रेलवे) व राज का विशेष आभारी हूँ जिनके अथक परिश्रम से पुस्तक का प्रकाशन संभव हो पाया है।

रोहित चौधरी

INDEX

- चौहान वंश .... 1 - 6
- जयपुर का इतिहास .... 7 - 11
- मारवाड़ का इतिहास .... 12 - 18
- मेवाड़ का इतिहास .... 19 - 27
- अन्य राजवंश .... 28 - 31
- ब्रिटिश आधिपत्य .... 32 - 33
- 1857 का विद्रोह .... 34 - 36
- राजस्थान का एकीकरण .... 37 - 39
- किसान व जनजाति आंदोलन .... 40 - 44
- प्रजामण्डल .... 45 - 48
- राजनीतिक संस्था,समाचार पत्र .... 49 - 50
- राजस्थान के क्रांतिकारी .... 51 - 56
- सभ्यता .... 57 - 60
- पुरातात्विक स्रोत .... 61 - 63
- मध्यकालीन प्रशासनिक राजस्व व्यवस्था .... 64 - 65
- जनपद एवं प्राचीन नाम .... 66 - 67

चौहान वंश

- 7 – 12 वी शताब्दी का युग राजपूत युग कहा जाता है

चौहान की उत्पत्ति के मत

● अग्निकुंड –

- चंदबरदाई (पृथ्वीराज रासो ग्रंथ) के अनुसार वशिष्ठ ऋषि ने अग्निकुंड से चार यौद्वा उत्पन किये – गुर्जर प्रतिहार, परमार, चालुक्य (सौंलकी), चौहान (चाहमान)
- मुहणौत नैंणसी, सूर्यमल्ल मिश्रण ने इसका समर्थन किया

● सूर्यवंशी –

- पृथ्वीराज विजय, हमीर महाकाव्य, हम्मीर रासो ग्रंथ व पंडित गौरीशंकर हीराचंद ओझा के अनुसार सूर्यवंशी थे

● चंद्रवंशी मत –

- हाँसी शिलालेख, अचलेश्वर मंदिर का लेख

● इंद्र के वंशज –

- रायपाल का सेवाडी (पाली) अभिलेख

● विदेशी मत –

- शक सिथियन – कर्नल जेम्स टॉड + विलियम क्रुक
- हूणो – वी. ए. स्मिथ
- कुषाण (यू – ची) – अलेक्जेण्डर कनिघम
  (ब्रोचगुर्जर ताम्रपत्र 678 ई आधार पर)

● वैदिक आर्यो की संतान (विशुद्व भारतीय) –

- सी.वी.वैध + गौरीशंकर हीराचंद ओझा

● ब्राह्मण मत –

- गोपीनाथ शर्मा (बिजौलिया शिलालेख के अनुसार वत्स गोत्र ब्राह्मण बताया) + डॉ. दशरथ शर्मा (ग्रंथ – अर्ली चौहान डायनेस्टी) + डी.आर. भंडारकर +कायम खा रासो ग्रंथ (रचयिता – जान कवि) के अनुसार

सांभर / अजमेर के चौहान

- चौहानो का मूल स्थान सपादलक्ष (सांभर के आस पास) था
- इन्हें शाकम्भरी (सांभर) के चौहान (चाहमान) कहा गया
- चौहानो ने प्रारंभिक राजधानी – अहिच्छत्रपुर (नागौर) को बनाया, इसके बाद क्रमशः सांभर व अजमेर को राजधानी बनाया था

❖ वासुदेव चौहान - 551 ईस्वी

- चौहान वंश का संस्थापक / आदि पुरुष / मूलपुरूष
- बिजौलिया शिलालेख के अनुसार – वत्स गोत्र का ब्राह्मण बताया जिसने साम्भर झील का निर्माण कराया
- राजधानी – अहिच्छत्रपुर को बनाया

> नोट – प्रारंभ में चौहान गुर्जर प्रतिहारों के सामत थे परंतु गुवक प्रथम ने इनकी अधीनता अस्वीकार कर दी

❖ गुवक प्रथम –

- दुर्लभराज का पुत्र था
- प्रतिहार शासक नागभट्ट द्वितीय का सामंत था
- हर्षनाथ मंदिर (सीकर) का निर्माण कराया

> नोट – हर्षनाथ जी चौहानों के ईष्टदेव/अराध्यदेव है

❖ चंदनराज –

- इनकी पत्नी रूद्राणी पुष्कर झील में प्रतिदिन 1 हजार दीपक जलाकर महादेवजी की उपासना करती थी

❖ सिंहराज –

- महाराजाधिराज की उपाधि धारण की

❖ विग्रहराज द्वितीय –

- प्रारंभिक चौहान शासको में सबसे प्रतापी शासक
- अहिलवाडा के चालुक्य शासक मूलराज प्रथम को हराया
- भडोच (गुजरात) में अपनी कुलदेवी आशापुरा माता का मंदिर बनाया

❖ गोविंदराज तृतीय –

- पृथ्वीराज विजय मे इन्हें वैरीघट्ट (शत्रु संहारक) कहा गया
- गजनी के शासकों को मारवाड़ में आगे बढ़ने से रोका था

जयपुर का इतिहास

- शासन किया – कच्छवा वंश
  (भगवान राम के पुत्र कुश के वंशज)
- कुलदेवी – जमुवाय माता
- अराध्य देवी – शीला देवी – आमेर दुर्ग
- कुलदेवता – अम्बीकेश्वर महादेव – आमेर
- अराध्य देवता – गोविंद देव जी – जयपुर
- प्राचीन काल में इस क्षेत्र को ढूँढाड़ के नाम से जानते थे

● राजधानी –

(1) दौसा – 1137 ई में दूल्हेराय ने बडगुर्जरों को पराजित कर बनायी थी

(2) मांची / जमवारामगढ़ – 1137 ई में दूल्हेराय ने मीणाओं को पराजित कर बनायी

(3) आमेर – 1207 ई में कोकिल देव ने मीणाओं को पराजित कर राजधानी बनाया

(4) जयपुर – 1727 ई में सवाई जयसिंह ने बनाई

❖ दूल्हेराय / तेजकरण / ढोला –

- मूल नाम – साल्हकुमार
- कच्छवा वंश का संस्थापक / आदि पुरुष / मूल पुरूष
- रामगढ़ में कुलदेवी जमुवाय माता का मंदिर बनाया

● ढोला मारू की प्रेम कहानी –

- ढोला (नरवर – मध्यप्रदेश के सोढा का पुत्र)
- मारू (पूंगलगढ – बीकानेर के पूंगल की बेटी)
- ढोला मारू की शादी पुष्कर में होती है
- विवाह के समय ढोला–3 साल, मारू – 1.5 साल की थी

❖ कोकिलदेव –

- मीणाओ को हराकर आमेर को 1207 ई में राजधानी बनाया
- अम्बीकेश्वर महादेव मंदिर का निर्माण कराया था

❖ पंचवनदेव –

- पृथ्वीराज चौहान ने महोबा का प्रशासक नियुक्त किया
- तराईन युद्ध में लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए

❖ राजदेव –

- आमेर में कदमी महल का निर्माण कराया, यहाँ पर आमेर के शासको का राजतिलक मीणाओं द्वारा किया जाता था

❖ पृथ्वीराज कच्छवा –

- आमेर राज्य को अपने 12 पुत्रों में बाँट दिया
- आमेर 12 कोटडी कहलाया
- प्रमुख जागीर – राजावत, नाथावत, खंगारोत, बांकावत
- 1527 ई में खानवा के युद्ध में राणा सांगा की ओर से लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए
- इनके काल में गलता जी (जयपुर) में कृष्णदास पयहारी ने रामानंदी संप्रदाय की स्थापना की

❖ रतनसिंह –

- शेरशाह सूरी की अधीनता स्वीकार की

❖ भारमल (1547-1574 ई)–

- 1562 में बादशाह अकबर ने अजमेर की तीर्थयात्रा की तब भारमल ने 'चगताई खाँ' की सहायता से अकबर से भेंट की
- भारमल ने अपनी पुत्री हरका बाई / मानमति / शाही बाई का विवाह 6 फरवरी 1562 को सांभर में अकबर से कर दिया, इनसे सलीम (जहाँगीर) का जन्म हुआ, जहाँगीर ने अपनी माता हरका बाई का नाम मरियम उज्जमानी रखा
- राजपूताना के पहले शासक जिसने मुगलों की अधीनता स्वीकार की और वैवाहिक संबंध बनाये
- अक़बर ने भारमल को 5000 का मनसबदार बनाया तथा राजा व अमीर–उल–उमरा की उपाधि दी

नोट – अक़बर भारमल की पहली मुलाक़ात 1556 में मजनू खा ने नारनौल (दिल्ली) में करायी थी

❖ भगवंत दास कच्छवा (1574-1589)

- अकबर ने इनको भी अमीर उल उमरा की उपाधि दी और 5000 का मनसबदार बनाया
- चित्तौड़ आक्रमण (1568 ई) में अकबर का साथ दिया
- 13 फरवरी 1585 में भगवंतदास ने अपनी पुत्री मानबाई का विवाह जहांगीर से किया था, इनसे खुसरो का जन्म हुआ था

❖ मिर्जा राजा मानसिंह (1589-1614 ई) –

- जन्म – 1550 ई मौजमाबाद (जयपुर)
- 12 वर्ष की उम्र में ही मुगल दरबार में चले गये
- अकबर + जहाँगीर की सेवा की
- उपाधि – फर्जन्त (पुत्र) + मिर्जा राजा (अकबर ने दी)
- 1569 में अपने पिता भगवन्तदास के साथ रणथंभौर के सुर्जन हाड़ा के विरुद्ध प्रथम सैनिक अभियान किया
- 1572 ई सरनाल युद्ध (गुजरात) में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी

मारवाड का इतिहास

- क्षेत्र – जोधपुर + बाड़मेर + नागौर + जालोर + पाली

● **राठौड़ों की उत्पत्ति –**

- मुहणौत नैणसी + जोधपुर राज्य की ख्यात + पृथ्वीराज रासो के अनुसार जयचंद गहढवाल के पौत्र राव सीहा ने 1240 ई में कन्नौज से आकर राठौड़ वंश की स्थापना की
- पंडित गौरीशंकर हीराचंद ओझा के अनुसार बदायूँ से आकर राव सीहा ने राठौड़ वंश की स्थापना की
- राठौड़ स्वंय को सूर्यवंशी मानते हैं
- राठौड शब्द संस्कृत के राष्ट्रकूट से बना है जो दक्षिण भारत की एक जाति थी
- कर्नल जेम्स टॉड ने कहा – मुगल बादशाह अपनी विजयों में से आधी के लिए राठौडो की 1 लाख तलवारों के अहसानमंद थे
- राठौडो की कुल देवी – नागणेची माता
- आराध्य देवी / ईष्ट देवी – चामुंडा माता (मेहरानगढ़ दुर्ग)

❖ राव सीहा –

- मारवाड़ के राठौड वंश का संस्थापक / आदिपुरुष
- पाली के पालीवाल ब्राह्मणों की रक्षा के लिए मारवाड आये क्योंकि मेर पालीवालो से लूटपाट करते थे
- राव सीहा + पालीवाल ब्राह्मणों व मुस्लिम आक्रांताओं के बीच लड़े गये युद्ध में 1 लाख लोग मारे गए , इस युद्ध को लाख झंवर कहा जाता है
- राव सीहा का स्मारक – बीठू (पाली)

❖ राव आस्थान –

- राव सीहा के पुत्र
- खेड (बालोतरा) पर अधिकार कर रणछोड़राय मंदिर का निर्माण कराया
- जलालुद्दीन खिलजी की सेना से युद्ध करते हुए वीरगति को प्राप्त हुए

❖ राव धूहड –

- कर्नाटक से अपनी कुलदेवी चक्रेश्वरी (नागणेची माता) की मूर्ति लाकर नगाणा गाँव (बालोतरा) में स्थापित कराई

❖ मल्लीनाथ जी –

- बाड़मेर के मालाणी क्षेत्र का नाम इन्हीं के नाम पर पड़ा
- राजस्थान के लोक देवता हैं जिनका मंदिर तिलवाड़ा (बालोतरा) में है

❖ राव चूण्डा –

- वीरमदेव के पुत्र थे
- प्रतिहार वंश की ईन्दा शाखा ने अपनी राजकुमारी की शादी राव चूण्डा के साथ कर दी तथा मंडोर दहेज में दे दिया
- राव चूण्डा ने अपनी राजधानी मंडोर (जोधपुर) को बनाया

नोट – मंडोर का प्राचीन नाम – माण्डवपुर

- मारवाड़ के राठौड़ वंश का वास्तविक संस्थापक
- मारवाड़ में सामंतशाही / नौकरशाही की शुरुआत की
- राव चूण्डा ने अपनी रानी किशोर कंवरी के प्रभाव में छोटे बेटे राव कान्हा को राजा बना दिया

बडे पुत्र राव रणमल ने अपनी बहन हंसाबाई का विवाह राणा लाखा के साथ इस शर्त पर किया कि इनसे उत्पन्न पुत्र ही मेवाड़ का शासक बनेगा, राव रणमल मेवाड में रहकर राणा मोकल के संरक्षक बने लेकिन रणमल ने राणा चूण्डा के भाई राघवदेव की हत्या करवा दी तब महाराणा कुम्भा ने रणमल की प्रेमिका भारमली की सहायता से रणमल की हत्या करवा दी

❖ राव जोधा (1438 – 1489 ई) –

- 1438 में जब चित्तौड़ में इनके पिता रणमल की हत्या हुई तब जोधा मेवाड से अपने साथियो के साथ मारवाड़ की तरफ भागा, हड़बूजी के आशीर्वाद से राव जोधा ने अहाडा हिगोंला को पराजित कर मंडोर दुर्ग पर अधिकार कर लिया

● **आवल बावल की संधि – 1453 ई**

- हंसाबाई की मध्यस्थता से मेवाड़ (महाराणा कुंभा) व मारवाड़ (राव जोधा) की सीमा का निर्धारण सोजत (पाली) में किया गया
- राव जोधा ने अपनी पुत्री श्रृंगार देवी का विवाह महाराणा कुम्भा के पुत्र रायमल से कर दिया
- राव जोधा ने 13 मई 1459 को मेहरानगढ़ दुर्ग (नींव करणी माता ने रखी) बनाकर जोधपुर शहर बसाया
- राव जोधा के दूसरे पुत्र राव बीका ने बीकानेर बसाया
- राव जोधा के पुत्र राव दूदा ने मेड़ता बसाया व राव जोधा के पुत्र करमसीजी के वंशज करमसोत राठौड़ कहलाये
- राव जोधा की रानी जसमादे ने जोधपुर में राणीसर तालाब का निर्माण कराया व अपनी माता कोडमदे के नाम पर जोधा ने कोडमदेसर तालाब बनाया
- राव जोधा ने दिल्ली शासक बहलोल लोदी को हराया
- पंडित गौरीशंकर हीराचंद ओझा के अनुसार राव जोधा मारवाड़ का प्रथम प्रतापी राजा था

मेवाड का इतिहास

- **क्षेत्र** – उदयपुर, चित्तौड़, राजसमंद, भीलवाड़ा, प्रतापगढ़
- प्राचीन नाम – मेदपाट / प्रागवाट
- महाभारत काल में शिवी जनपद कहा जाता था जिसकी राजधानी मध्यमिका (नगरी–चित्तौड़गढ़) थी
- वंश – गुहिल वंश / सिसोदिया वंश ने शासन किया
- कुलदेवी –बाण माता, इष्ट देवी – अन्नपूर्णा माता
- कुल देवता – एकलिंग जी

- **रक्त तिलक** –
- मेवाड महाराणा का राजतिलक उन्दरी गाँव (ईडर) का भील राजा अपने अंगूठे के रक्त से करता था
- मेवाड़ झंडे का वाक्य–जो दृढ़ राखे धर्म, तिहि राखे करतार

- **उत्पत्ति** –
- कर्नल जेम्स टॉड के अनुसार गुहिलो की उत्पत्ति वल्लभी (गुजरात) के शासक वंश से हुई है
- अबुल फजल के अनुसार मेवाड़ शासक ईरान के शासक नौशेर खाँ आदिल की संतान थे
- डी.आर. भंडारकर (नागर ब्राह्मणों से), गोपीनाथ शर्मा, दशरथ शर्मा, जे.एन. आसोपा, मुहणौंत नैंणसी – गुहिल वंश की उत्पत्ति ब्राह्मण वंश से मानते हैं
- मेवाड़ शासक स्वयं को भगवान राम का वंशज मानते हैं
- पंडित गौरीशंकरी हीराचंद ओझा सूर्यवंशी मानता है
- कर्नल जेम्स टॉड व मुहणौंत नैंणसी गुहिल वंश की 24 शाखा बताते हैं व कवि श्यामलदास ने गुहिलो की 36 शाखा बताई हैं

❖ गुहिल / गुहिलादित्य –
- गुहिल वंश का संस्थापक / आदिपुरुष – 566 ई
- लालन पालन गुफा में कमलावती ब्राह्मणी ने किया

❖ बप्पा रावल (734 - 753 ई)–
- मूल नाम – कालभोज
- बप्पा रावल हारित ऋषि की गाये चराता था, हारित ऋषि के आशीर्वाद से ही बप्पा रावल ने मेवाड़ राज्य प्राप्त किया
- 734 ई में चित्तौड़गढ़ शासक मानमौर्य को पराजित कर चित्तौड़गढ़ पर अधिकार कर नागदा को राजधानी बनाया
- गुहिल साम्राज्य का वास्तविक संस्थापक
- कैलाशपुरी गाँव में एकलिंगनाथ जी का मंदिर बनाया

सी. वी. वैद्य ने बप्पा रावल की तुलना चार्ल्स मार्टेल से की

- मेवाड़ महाराणा खुद को एकलिंग जी का दीवान कहते हैं
- मेवाड़ में सोने के सिक्के चलाये
- उपाधि – चक्कवै, हिन्दुआ सूरज (गुहिल वंश के सभी शासक स्वयं को हिन्दुआ सूरज कहते हैं)

❖ अल्लट –
- उपाधि – आलू रावल (ख्यात साहित्य में)
- हूण राजकुमारी हरियादेवी से विवाह किया
- आहड़ को दूसरी राजधानी बनाया व आहड में वराह मंदिर का निर्माण कराया
- सर्वप्रथम मेवाड़ में नौकरशाही की शुरूआत की

❖ रणसिंह / कर्णसिंह –
- इनके दो पुत्र क्षेमसिंह व राहप हुए
- क्षेमसिंह ने रावल शाखा को चलाया व राहप ने सिसोदा गांव की स्थापना कर राणा शाखा (सिसोदिया वंश) की नींव डाली

❖ रावल सामन्त सिंह –
- इनके समय कीतू चौहान ने मेवाड़ पर अधिकार कर लिया तब इन्होंने वागड़ राज्य की स्थापना की

❖ रावल जैत्रसिंह (1213 - 1253 ई)–
- **भूताला का युद्ध** – 1227 ई
- दिल्ली के गुलाम वंश के सुल्तान इल्तुतमिश व जैत्रसिंह के मध्य हुआ जिसमें जैत्रसिंह की विजय हुई
- इस युद्ध की जानकारी जयसिंह सूरी के ग्रंथ हम्मीर मदमर्दन में मिलती है
- जैत्रसिंह ने चित्तौड़गढ़ को राजधानी बनाया
- डॉक्टर दशरथ शर्मा के अनुसार मध्यकालीन मेवाड़ के इतिहास का स्वर्णकाल रावल जैत्रसिंह का काल है
- डॉ गौरीशंकर हीराचंद ओझा ने कहा – दिल्ली के गुलाम वंश के सुल्तानों के समय में मेवाड़ के राजाओं में सबसे प्रतापी और बलवान राजा जेत्रसिंह ही हुआ, जिसकी वीरता की प्रशंसा उसके विरोधियों ने भी की है

❖ रावल तेजसिंह –
- इनके समय कमलचंद्र द्वारा ताड़पत्र पर चित्रित प्रथम ग्रंथ 'श्रावक प्रतिक्रमण सूत्र चूर्णी' चित्रित किया गया
- परमभट्टारक, महाराजाधिराज, परमेश्वर उपाधि धारण की
- इनकी पत्नी जेतलदेवी ने चित्तौड़गढ़ में श्याम पार्श्वनाथ मंदिर का निर्माण कराया

❖ समरसिंह –
- प्रमुख शिल्पी – पद्मसिंह, केलसिंह, केल्हण तथा कर्मसिंह

● **राणा सांगा की सहायता करने वाले शासक –**

अफगान सुल्तान	महमूद लोदी
मेव शासक	हसन खा मेवाती (सांगा का सेनापति)
मारवाड़	राव मालदेव (राव गांगा का पुत्र)
बीकानेर	राव कल्याणमल (राव जैतसी का पुत्र)
आमेर	पृथ्वीराज कच्छवा
मेड़ता	रायमल राठौड़, वीरमदेव मेड़तिया
चंदेरी	मेदिनीराय
ईडर	भारमल
वागड (डूंगरपुर)	महारावल उदयसिंह
देवलिया (प्रतापगढ़)	रावत बाघसिंह
अजमेर	कर्मचंद पंवार
जगनेर (उत्तरप्रदेश)	अशोक परमार
सादड़ी	झाला अज्जा
सलूम्बर	रतनसिंह चुंडावत
सिरोही	अखैराज देवड़ा
परमार वंश के	गोकुलदास परमार
नागौर	खानजादा
रायसीन	सलहदी तँवर

- युद्ध में राणा सांगा के तीर लगने से बेहोश हो जाने पर सादड़ी के झाला अज्जा ने राजचिन्ह धारण किया
- खानवा युद्ध में बाबर की विजय हुई

● **राणा सांगा की हार के कारण –**

- बाबर का तोपखाना, तुलुगमा पद्धति
- रायसीन के सलहदी तंवर व नागौर के खानजादा युद्ध से पहले बाबर से मिल जाते है, बाबर ने सलहदी तंवर को राणा सांगा के पास शांति समझौते के प्रस्ताव हेतु भेजा था
- बाबर के तीरंदाज (बाबर ने जीत का श्रेय इन्हें दिया)
- राणा सांगा के बेहोश होने पर इन्हें बसवा (दौसा) लाया गया जहां राणा सांगा का इलाज हुआ
- सांगा का चबूतरा – बसवा (दौसा)
- राणा सांगा ने बाबर को हराने की शपथ ली लेकिन मेवाड़ी सरदारों ने राणा सांगा को जहर दे दिया
- कालपी (उतरप्रदेश) में 30 जनवरी 1528 को राणा सांगा की मृत्यु हो गई
- राणा सांगा का अंतिम संस्कार मांडलगढ़ (भीलवाड़ा) में किया गया, यहीं पर राणा सांगा की 8 खभों की छतरी है

बाबर ने सांगा के बारे में लिखा – उसका मुल्क 10 करोड़ की आमदनी का था, उसकी सेना में 1 लाख सवार थे

- राणा सांगा के एक आँख, एक हाथ, एक पैर नहीं था

- पानीपत का प्रथम युद्ध – 21 अप्रेल 1526 ई को बाबर व इब्राहिम लोदी के मध्य हुआ जिसमें बाबर ने तोप, बारूद का प्रयोग करके इब्राहिम लोदी को मारकर भारत में मुगल वंश की नींव रखी थी
- बाबर की पुस्तक –बाबरनामा / तुजुक ए बाबरी (तुर्की भाषा) है इसका अब्दुल रहीम जी ने फारसी भाषा में अनुवाद किया
- बाबर ने चार युद्ध लड़े –पानीपत का युद्ध, खानवा का युद्ध, चंदेरी का युद्ध (जनवरी 1528 ई), घाघरा का युद्ध – 1529 ई

❖ महाराणा रतनसिंह (1528 - 1531 ई) –

- राणा सांगा के पुत्र भोजराज (मीराबाई का पति) का खातौली युद्ध में घायल हो जाने से निधन हो गया था
- राणा सांगा के पुत्र रतनसिंह बूंदी के सूरजमल हाडा के साथ अहेरिया उत्सव (आखेट) में खेलते समय मारे गये

❖ महाराणा विक्रमादित्य (1531- 1536 ई) –

- महाराणा सांगा व हाड़ी रानी कर्मावती का पुत्र था
- इनके समय 1533 ई में गुजरात के शासक बहादुर शाह ने आक्रमण किया, कर्मावती ने रणथम्भौर दुर्ग देकर बहादुरशाह से संधि की लेकिन 1535 ई में बहादुरशाह ने पुनः आक्रमण किया, चित्तौड़ की रक्षा हेतु कर्मावती ने हुमायूं को राखी भेजी
- हुमायूं सहायता करने के लिए समय पर नहीं आया तो हाड़ी रानी कर्मावती ने अपने दोनों पुत्रों विक्रमादित्य व उदयसिंह को अपने मायके (बूंदी) भेज दिया

● **चित्तौड़ का दूसरा साका – 1535 ई**

- केसरिया – देवलिया के रावत बाघसिंह
- जौहर – कर्मावती व विक्रमादित्य की पत्नी जवाहर बाई ने
- पृथ्वीराज सिसोदिया के दासी पुत्र बनवीर ने 1536 ई में विक्रमादित्य की हत्या कर दी
- पन्नाधाय ने अपने बेटे चंदन का बलिदान देकर उदयसिंह के प्राण बचाये व उदयसिंह को चित्तौड़गढ़ दुर्ग से निकालकर कुंभलगढ़ दुर्ग में 'आशा देवपुरा' किलेदार के पास भेज दिया

❖ महाराणा उदयसिंह (1537-1572 ई) –

- 1537 ई में राज्याभिषेक कुंभलगढ़ दुर्ग में हुआ

● **मावली का युद्ध – 1540 ई**

- उदयसिंह ने मालदेव के सहयोग से बनवीर को पराजित कर चित्तौड़ पुनः प्राप्त प्राप्त कर लिया
- गिरी सुमेल युद्ध के बाद शेरशाह सूरी मेवाड़ की तरफ आ रहा था तब उदयसिंह ने किले की चाबियाँ शेरशाह के पास भिजवा दी, इस पर कर्नल टॉड ने कहा कि – यदि राणा सांगा और प्रताप के बीच में उदयसिंह नही होता तो मेवाड का इतिहास और अधिक उज्जवल होता

- सादड़ी के झाला बीदा (झाला मन्ना / मान) ने राणा प्रताप का छत्र धारण किया और वीरगति को प्राप्त हुआ
- महाराणा प्रताप का घोड़ा चेतक टूटी टांग के साथ बलीचा के पास नाला पार करता हुआ वीरगति को प्राप्त हुआ
- चेतक की समाधि – बलीचा (राजसमंद)
- महाराणा प्रताप ने कोल्यारी गाँव पहुंच कर अपना व घायलों का उपचार कराया

● **हल्दीघाटी में विजय** – अकबर की हुवी लेकिन राजप्रशस्ति, राजप्रकाश, जगदीश मंदिर प्रशस्ति में महाराणा प्रताप को विजयी बताया है क्योंकि हल्दीघाटी युद्ध के बाद भी प्रताप ने जमीनी पट्टे ताम्रपत्र के रूप में जारी किए थे और पट्टे जारी करने का हक राजा को होता था

नोट – मानसिंह ने मुगल सेना को हल्दीघाटी युद्ध से पहले मांडलगढ़ में पहाड़ी प्रशिक्षण दिया था

● **हल्दीघाटी युद्ध के उपनाम** –

- गोगुंदा का युद्ध – अब्दुल कादिर बदायूंनी (युद्ध का प्रत्यक्ष वर्णन पुस्तक–मुन्तखब उत तवारीख में किया)
- खमनौर का युद्ध – अबुल फजल
- मेवाड़ की थर्मोपल्ली – कर्नल जेम्स टॉड
- कर्नल जेम्स टॉड ने अपनी पुस्तक 'एनाल्स एण्ड एंटीक्यूटीज ऑफ राजस्थान' में प्रथम बार इस युद्ध को हल्दीघाटी के नाम से संबोधित किया

● **हाथी** –

- मानसिंह का हाथी – मरदाना
- मुगल सेना के अन्य हाथी – गजराज, गजमुक्त, रनदार राणा प्रताप के हाथी – लूणा, रामप्रसाद (अकबर ने रामप्रसाद का नाम पीर प्रसाद रखा)
- हल्दीघाटी युद्ध के बाद अकबर ने उदयपुर का प्रशासन आमेर के जगन्नाथ कच्छवा को सौंपा

● **शाहबाज खा का कुंभलगढ़ पर आक्रमण** –

- शाहबाज खां ने 1577–1580 के मध्य मेवाड़ पर तीन बार आक्रमण किया
- शाहबाज खां ने 1578 ई में कुंभलगढ़ दुर्ग पर अधिकार कर लिया, महाराणा प्रताप पहाड़ों में चले गए

● **भामाशाह की भेंट** –

- चूलीया गांव में भामाशाह व उनके भाई ताराचंद ने महाराणा प्रताप को 25 लाख रुपये व 20 हजार अशर्फियां भेंट की, इससे महाराणा 25 हजार की सेना का 12 वर्ष तक निर्वाह कर सकता था
- भामाशाह को मेवाड़ का उद्धारक, दानवीर कहा जाता है

● **अब्दुल रहीम खान ए खाना का आक्रमण – 1580 ई**

- रहीम जी ने शेरपुर गांव में अपना शिविर लगाया
- अमरसिंह इनकी बेगमों को बंदी बनाकर राणा प्रताप के पास ले गया, प्रताप ने बेगमों को सम्मान के साथ वापस भेज दिया

नोट – हल्दीघाटी युद्ध के बाद प्रताप ने छापामार युद्ध प्रणाली का प्रयोग किया था

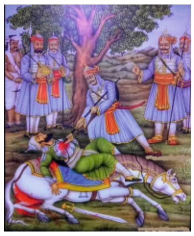

● **दिवेर का युद्ध – अक्टूबर 1582 ई**

- अकबर के काका सेरिमा सुल्तान खाँ ने दिवेर (राजसमंद) में शिविर लगा रखा था
- अमरसिंह ने अपने भाले से सेरिमा सुल्तान खा को घोड़े सहित धराशाई कर दिया
- कर्नल जेम्स टॉड ने इस युद्ध को मेवाड़ का मैराथन कहा

● **जगन्नाथ कच्छवा का आक्रमण – 1584 ई**

- महाराणा प्रताप के विरुद्ध अक़बर द्वारा भेजा गया अंतिम सैनिक अभियान था
- जगन्नाथ कछवाह की मृत्यू / 32 खम्भों की छतरी – मांडल (भीलवाड़ा) में है

● **चांवड (सराड़ा – सलूम्बर)** –

- 1585 में राणा प्रताप ने चांवड के शासक लूणा को हराकर चांवड को अपनी आपातकालीन राजधानी बनाया
- चांवड 1585 – 1615 ई तक राजधानी रही

● **दरबारी विद्वान** –

- राणा प्रताप के गुरु – आचार्य राघवेंद्र
- दरबारी कवि चक्रपाणि मिश्र ने चार ग्रंथों की रचना कि – विश्ववल्लभ, मुहूर्तमाला, व्यवहारादर्श, राज्याभिषेक पद्धति
- महाराणा प्रताप ने चित्तौड़गढ़ दुर्ग और मांडलगढ को छोड़कर सभी क्षेत्र वापस जीत लिए थे
- राणा प्रताप को मेवाड़ केसरी, हिन्दुआ सूरज कहा जाता है
- 19 जनवरी 1597 ई को महाराणा प्रताप की मृत्यु हो गई
- राणा प्रताप की 8 खम्भों की छतरी बाडोली (सलूम्बर) में केजड बांध पर बनी हुई है
- राणा प्रताप की मृत्यु पर अक़बर भी दुखी हुआ था, दूरसा आढा ने मुगल दरबार में दोहा सुनाया –

  " गहलोत राणो जीत गयो, दसण मूंद रसणा डसी
  नीलास मूक भरिया नयन, तो मृत शाह प्रताप सी "

- दुरसा आढा ने राणा प्रताप की शौर्य गाथा पर विरुद्ध छतहरी की रचना की व कन्हैयालाल सेठिया ने पाथल (महाराणा प्रताप) – पीथल (पृथ्वीराज राठौड़) की रचना की

अन्य राजवंश

गुर्जर-प्रतिहार वंश

- गुर्जरात्रा प्रदेश से गुर्जर प्रतिहार शब्द बना
- इतिहासकार रमेश चन्द्र मजूमदार के अनुसार गुर्जर प्रतिहारो ने 6 – 12 वी शताब्दी तक अरब आक्रमणकारियो के लिए बाधक का काम किया
- बादामी के चालुक्य नरेश पुलेकिशन द्वितीय के ऐहोल अभिलेख में सर्वप्रथम गुर्जर जाति का उल्लेख मिलता है

नोट – नीलकुण्ड, रामनपुर, देवली व करहाड के शिलालेखों में प्रतिहोरो को गुर्जर कहा गया है

- मुहणौत नैंणसी गुर्जर प्रतिहारों की 26 शाखा बताता है

मंडोर की शाखा

- गुर्जर प्रतिहारों की 26 शाखाओं में सबसे प्राचीन व महत्वपूर्ण शाखा मंडोर की शाखा है
- मंडोर के प्रतिहार क्षत्रिय थे

● **मण्डौर शासको का क्रम –**

हरिश्चंद्र ➢ रज्जिल ➢ नरभट्ट ➢ नागभट्ट प्रथम ➢ तात (टाटा) ➢ भोज ➢ यशोवर्धन ➢ शीलुक ➢ कक्क ➢ बाउक ➢ कक्कुक

❖ हरिश्चन्द्र –

- प्रतिहार वंश का संस्थापक
- रोहिलद्धि नाम से भी जाना जाता है
- हरिश्चंद्र की दो पत्नियाँ थी – एक ब्राह्मणी दूसरी क्षत्राणी भद्रा, क्षत्रिय पत्नी भद्रा से चार पुत्र भोगभट्ट, कदक, रज्जिल और दह उत्पन्न हुए
- वंशावली तीसरे पुत्र रज्जिल से प्रांरभ होती है
- राजधानी – मंडोर

❖ नागभट्ट प्रथम –

- नरभट्ट का पुत्र व रज्जिल का पोता था
- राजधानी मंडोर से मेदान्तक (मेडता) को बनाया
- नागभट्ट की रानी जजिका देवी से दो पुत्र तात व भोज उत्पन्न हुए, तात ने अपने भाई भोज को मंडोर सौंप सन्यास ग्रहण कर लिया था

❖ कक्क –

- व्याकरण, ज्योतिष, तर्क (न्याय) और सर्वभाषाओ के कवित्व में निपुण थे व मुदागिरी (मुंगैर–बिहार) में गौड शासक धर्मपाल को पराजित किया

❖ कक्कुक –

- 861 ई में घटियाला शिलालेख (फलौदी) उत्कीर्ण कराया जिसमें प्रतिहार शासको की जानकारी मिलती है
- घटियाला और मंडोर में जयस्तम्भ भी स्थापित करवाये

➢ जालौर, उज्जैन और कन्नौज के गुर्जर–प्रतिहार मंडोर के प्रतिहारों से ही संबधित थे

भीनमाल की शाखा

❖ नागभट्ट प्रथम –

- भीनमाल (जालौर) शाखा का संस्थापक माना जाता है
- नागभट्ट प्रथम को नागावलोक व इसके दरबार को नागावलोक दरबार कहा जाता है
- इन्होंने भीनमाल को चावडों से जीता तथा भीनमाल (श्रीमाल) को राजधानी बनाया, बाद में उज्जैन को भी राजधानी बनाया
- मिहिरभोज की ग्वालियर प्रशस्ति में नागभट्ट प्रथम को नारायण व म्लेच्छो का नाशक कहा गया है
- अरब शासको को हराया व इनको सिंधु नदी के पश्चिम में खदेडने का काम किया

❖ वत्सराज –

- देवराज के पुत्र व प्रतिहार वंश के वास्तविक संस्थापक
- वत्सराज के काल में औसिया मे भगवान महावीर स्वामी के मंदिर का निर्माण हुवा
- वत्सराज के काल मे जिनदत सूरी ने 'हरिवंश पुराण' तथा उधोतन सूरी ने 'कुवलयमाला' ग्रंथ की रचना की
- कुवलयमाला ग्रंथ में वत्सराज को रणहस्तिन कहा गया

● **त्रिपक्षीय संघर्ष –**

- वत्सराज के समय कन्नौज पर अधिकार करने के लिए बंगाल के पाल वंश, दक्षिण के राष्ट्रकूट व गुर्जर प्रतिहार वंश का करीब 100 साल तक संघर्ष चला
- इस संघर्ष का प्रारम्भ वत्सराज ने किया इन्होंने पाल नरेश धर्मपाल, कन्नौज के इन्द्रायुध को पराजित कर कन्नौज पर अधिकार कर लिया
- राष्ट्रकूट शासक ध्रूव ने वत्सराज को पराजित कर अपने राष्ट्रकूट कुलचिह्न (एम्बलम) में गंगा व यमुना के चिन्हो को सम्मिलत किया

❖ नागभट्ट द्वितीय –

- कन्नौज के शासक चक्रायुद्ध को हराकर कन्नौज को अपनी राजधानी बनाया व प्रतिहारों की प्रतिष्ठा दुबारा स्थापित की

ब्रिटिश आधिपत्य

- राजस्थान में शासको व सामन्तों के आपसी झगड़े से मराठो का हस्तक्षेप इतना बढ गया था कि मराठो की रानी अहिल्याबाई ने केवल चिट्ठी से धमकाकर मेवाड से निम्बाहेड़ा का परगना छीन लिया था
- 1720 ई मे पेशवा बाजीराव ने मराठा ध्वज अटक से कटक तक फहराने का लक्ष्य निर्धारित किया
- अमीर खा के नेतृत्व में 60 हजार पिण्डारी राजपूताना में लूटपाट करते थे
- राजपूताना के राजाओ ने अपने राज्य की रक्षा करने हेतु अंग्रेजो के साथ सहायक संधियाँ की

❖ ईस्ट इंडिया कंपनी की सहायक संधि –

- मुख्य उद्देश्य – अंग्रेजों की सत्ता स्थापित करना
- 1803 ई में गवर्नर जनरल लार्ड वेलेजली ने सहायक संधि शुरू की जिसका प्रतिनिधि लार्ड लेक को बनाया
- सर्वप्रथम संधि 29 सितम्बर 1803 को भरतपुर शासक रणजीत सिंह से की
- आक्रामक, विस्तृत रक्षात्मक संधि 14 नवम्बर 1803 में अलवर शासक ब्खतावर सिंह (अलवर रियासत के संस्थापक प्रतापसिंह के पुत्र थे) के साथ की

❖ अधीनस्थ पार्थक्य की नीति –

- सहायक संधि का परिवर्तित नाम
- गवर्नर जनरल – लार्ड हेस्टिंग्स
- प्रतिनिधि – चार्ल्स मेटकॉफ (दिल्ली रेजीडेन्ट से थे)
- चार्ल्स मेटकॉफ ने सुझाव दिया कि राजस्थान के राजपूत शासकों का एक परिसंघ बना दिया जाये जो ब्रिटिश संरक्षण में कार्य करे जिससे राजपूताना में पिण्डारी और मराठो की लूटपाट को रोका जा सके और यहाँ शांति व्यवस्था बनी रहे

- सर्वप्रथम संधि करौली शासक हरवक्षपाल ने 9 नवम्बर 1817 को की, इसके बाद टोंक के अमीर खा पिण्डारी ने 15 नवम्बर 1817 को ईस्ट इंडिया कम्पनी से संधि की

- आक्रामक, विस्तृत रक्षात्मक संधि कोटा शासक उम्मेद सिंह ने 26 दिसंबर 1817 (यह संधि कोटा के सेनापति झाला जालिम सिंह द्वारा की गई) को की

● अन्य रियासत की संधियाँ –

रियासत	तत्कालीन शासक	संधि की दिनांक
मारवाड	मानसिंह	6 जनवरी 1818
मेवाड	महाराणा भीमसिंह	13 जनवरी 1818
बून्दी	विष्णु सिंह	10 फरवरी 1818
बीकानेर	सूरत सिंह	21 मार्च 1818
किशनगढ	कल्याण सिंह	7 अप्रेल 1818
जयपुर	जगतसिंह द्वितीय	15 अप्रेल 1818
जैसलमेर	मूलराज द्वितीय	1 दिसम्बर 1819
सिरोही	शिवसिंह	11 सितम्बर 1823

- संधि में मारवाड के प्रतिनिधि विश्नराम आसोपा थे, संधि के बाद मारवाड शासक मानसिंह ने सन्यास ले लिया था
- मेवाड की तरफ से संधि पर हस्ताक्षर अजीत सिंह चूण्डावत ने किये व बीकानेर की तरफ से काशीनाथ ओझा ने संधि पर हस्ताक्षर किये
- अग्रेंजो से संधि करने वाली अंतिम रियासत सिरोही थी

● अन्य जानकारी –

- संधियो के तहत अहदनामा (इकरारनामा, समझौता पत्र) तैयार किया गया जिसके तहत ब्रिटिश सरकार और रियासते एक दूसरे के साथ मैत्री सद्भाव रखेगी
- राजपूताना कि रियासतें मराठो को खिराज (कृषि भूमि कर) व चौथ (मराठो द्वारा अन्य शासको से लिया जाने वाला सुरक्षा कर) देती थी वह अब अंग्रेजों को देगी

● A.G.G –

- संधियो के तहत 1832 में राजपूताना रेजीडेन्सी की स्थापना की गयी इसका मुख्यालय अजमेर था व इसका मुख्य अधिकारी A.G.G (एंजेट गवर्नर जनरल) था
- राजस्थान का प्रथम A.G.G – मि. लॉकेट (गवर्नर जनरल लार्ड विलियम बैंटिक ने नियुक्त किया – 1832)
- A.G.G के नीचे प्रत्येक रियासत में पोलिटिकल एंजेट (P.A) रहता था
- सभी रियासते A.G.G के नियंत्रण में थी
- 1845 में ग्रीष्मकाल में A.G.G का मुख्यालय माउंट आबू (सिरोही) स्थानांतरित किया गया

1857 का विद्रोह

❖ क्रांति के समय –

- ब्रिटेन की महारानी – विक्टोरिया
- प्रधानमंत्री – लॉर्ड पामर्स्टन
- भारत के गवर्नर जनरल – लार्ड कैंनिग
- राजस्थान के A.G.G – जार्ज पैट्रिक लारेन्स

❖ क्रांति का तात्कालिक कारण –

- ब्राउन बैस राइफल के स्थान पर एनफिल्ड राइफल का प्रयोग शुरू कर दिया जिसके कारतूस में गाय व सूअर की चर्बी का प्रयोग होता था

❖ पहली घटना –

- 29 मार्च 1857 को बैरकपुर छावनी (बंगाल) में 34 वी रेजीमेंट के सिपाही मंगल पाण्डे ने चर्बी लगे कारतूस के प्रयोग से मना कर दिया व अपने अधिकारी लेफ्टिनेंट बाघ व जनरल हयूसन की हत्या कर दी
- 8 अप्रेल 1857 को मंगल पाण्डे को फाँसी दे दी गई

❖ क्रांति की शुरुआत –

- 10 मई 1857 को मेरठ छावनी की 20 वी नेटिव इन्फेंट्री ने भी चर्बी वाले कारतूस के प्रयोग से मना कर दिया
- 11 मई 1857 को इन्होंने दिल्ली पर अधिकार कर लिया और अंतिम मुग्ल बादशाह बहादुर शाह जफर द्वितीय को क्रांति का नेता घोषित कर दिया
- क्रांति का प्रतीक – कमल और रोटी

❖ क्रांति के समय शासक – P.A

रियासत	शासक	पॉलिटिकल एजेन्ट
जयपुर	सवाई रामसिंह द्वितीय	विलियम ईडन
मारवाड	तख्त सिंह	मैक मेसन
मेवाड	महाराणा स्वरूप सिंह	मेजर शॉवर्स
बीकानेर	सरदार सिंह	
बूंदी	महाराव रामसिंह	
कोटा	महाराव रामसिंह द्वितीय	मेजर बर्टन
शाहपुरा	लक्ष्मण सिंह	
भरतपुर	महाराजा जसवंत सिंह	मॉरिसन
धौलपुर	भगवंत सिंह	
सिरोही	शिवसिंह	जे. डी. हॉल
टोंक	नवाब वजीरूद्दौला	
अलवर	विनयसिंह (बन्ने सिंह)	
जैसलमेर	रणजीत सिंह	

- क्रांति के समय झालावाड के शासक – पृथ्वी सिंह, प्रतापगढ के शासक – महारावल दलपत सिंह, बाँसवाडा के शासक – महारावल लक्ष्मण सिंह, डूँगरपुर के शासक – महारावल उदयसिंह द्वितीय, किशनगढ के शासक – पृथ्वीसिंह व करौली के शासक – मदनपाल थे

❖ क्रांति के समय राजस्थान में 6 सैनिक छावनियाँ

क्र.स.	छावनी	मुख्यालय	रेजीमेन्ट
1	नसीराबाद	अजमेर	15 वी बंगाल नैटिव इन्फेन्ट्री
2	नीमच	ग्वालियर	बंगाल सैनिक बिग्रेड
3	एरिनपुरा	पाली	जोधपुर लीजियन
4	देवली	टोंक	कोटा कन्टिलजेन्ट
5	ब्यावर	अजमेर	मेर/मेरवाडा रेजीमेंट
6	खैरवाडा	उदयपुर	मेवाड भील कोर

नोट – खैरवाडा, ब्यावर छावनी ने विद्रोह में भाग नहीं लिया

❖ नसीराबाद छावनी – 28 मई 1857

- राज. में क्रांति की शुरुआत
- छावनी में 15 वी, 30 वी बंगाल नेटिव इन्फैंट्री, भारतीय तोपखाने की सैनिक टुकड़ी तथा पहली बम्बई लांसर्स के सैनिक थे
- 15 वी बंगाल नेटिव इन्फैंट्री के सैनिको ने तोपखाने पर अधिकार कर लिया व अंग्रेज अधिकारी मेजर स्पोटिस वुड तथा कर्नल न्यूबरी की हत्या कर दी
- नेतृत्व कर्ता – बख्तावर सिंह
- अंग्रेज अधिकारी प्रिचार्ड ने बागीयो पर कार्यवाही करने के लिए कहा परन्तु सैनिको ने आदेश मानने से मना कर दिया
- छावनी लूटने के बाद क्रांतिकारी दिल्ली चले गये

नोट – अंग्रेजों ने अपनी व्यवस्था कायम रखने के लिए नसीराबाद में छावनी मण्डल की स्थापना की थी

❖ नीमच छावनी – 3 जून 1857

- छावनी मध्यप्रदेश में थी लेकिन इसका नियत्रंण मेवाड के पॉलिटिकल एजेन्ट के पास था
- अंग्रेज अधिकारी कर्नल एबोट ने 2 जून 1857 को हिन्दू और मुसलमान सिपाहियों को गंगा व कुरान की शपथ दिलाई की आप अंग्रेजों के प्रति वफादार रहोगे

राजस्थान का एकीकरण

● **भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम - 1947**

- इसकी धारा 8 के अनुसार भारत का विभाजन (भारत और पाकिस्तान) दो भागो में किया जायेगा
- भारत में 565 रियासतें थी और प्रत्येक रियासत को स्वतंत्रता होगी कि वह किसी भी राष्ट्र में मिल सकती है या अपना स्वतंत्र अस्तित्व भी रख सकती है
- 3 जून 1947 को लार्ड माउंटबेटन ने भारत के विभाजन की घोषणा की थी

लार्ड माउंटबेटन भारत के अंतिम वायसराय और स्वतंत्र भारत के पहले गवर्नर जनरल थे जबकि स्वतंत्र भारत के अंतिम गवर्नर जनरल चक्रवर्ती राजगोपालाचारी थे

- नरेन्द्र मण्डल का तत्कालीन अध्यक्ष भोपाल के नवाब हमीदुल्ला खां राजपूताने की रियासतों को पाकिस्तान में मिलाना चाहता था

● **भारतीय रियासती विभाग का गठन - 5 जूलाई 1947**

- अध्यक्ष – सरदार वल्लभ भाई पटेल
- सचिव – वी. पी. मेनन
- उद्देश्य – भारत में मिलने वाली रियासतो से विलय पत्र पर हस्ताक्षर कराना व विलय के समय रियासतों से संबधित समस्या का समाधान कराना
- रियासती विभाग ने रियासतो के सामने शर्त रखी की जिस रियासत की जनसख्यां 10 लाख से अधिक व वार्षिक आय एक करोड से ज्यादा होगी वो ही रियासत स्वतंत्र रह सकेगी
- राजस्थान में इस शर्त को पूरा करने वाली चार रियासत – जयपुर, जोधपुर, उदयपुर, बीकानेर थी
- विलय पत्र पर हस्ताक्षर करने वाली राजस्थान की प्रथम रियासत – बीकानेर (7 अगस्त 1947) व अंतिम रियासत धौलपुर (14 अगस्त 1947) थी
- जोधपुर के महाराजा हनुवंत सिंह अपनी रियासत को पाकिस्तान में मिलाना चाहते थे, वी.पी.मेनन ने अपनी पुस्तक 'द स्टोरी ऑफ इंटीग्रेशन ऑफ इंडियन स्टेटस' में इस बात का उल्लेख किया कि मुस्लिम लीग के नेताओं ने जोधपुर नरेश से कई बार मुलाकात की
- बाँसवाड़ा के महारावल चन्द्रवीर सिंह ने विलय पत्र पर हस्ताक्षर करते हुए कहा – मैं अपने डेथ वारण्ट पर हस्ताक्षर कर रहा हूँ

❖ **राजस्थान का एकीकरण**

- राजस्थान में 19 रियासते, 3 ठिकाने (नॉन सेल्यूट ठिकाने) व 1 केन्द्र शासित प्रदेश अजमेर – मेरवाडा था
- 3 ठिकाने – नीमराणा, कुशलगढ़, लावा थे
- एकीकरण में 8 वर्ष 7 माह 14 दिन लगे
- राज. एकीकरण का श्रेय – सरदार वल्लभ भाई पटेल (भारत का बिस्मार्क कहते है) को दिया जाता है

● **शासको द्वारा संघ के प्रयास -**

- मेवाड महाराणा भूपालसिंह ने संवैधानिक सलाहकार K.M. मुंशी की सलाह पर राजस्थान, गुजरात और मालवा के छोटे–छोटे राज्यों को मिलाकर 'राजस्थान यूनियन' बनाने के उद्देश्य से 25–26 जून 1946 को उदयपुर में सम्मेलन आयोजित करवाया जिसमें 22 राजाओं ने भाग लिया, महाराणा भूपालसिंह ने संविधान सभा समिति में शामिल होने का आह्वान भी किया
- जयपुर महाराजा सवाई मानसिंह ने भी अपने दीवान वी. टी. कृष्णामाचारी के साथ मिलकर राज्यों के संघ बनाने का प्रयास किया था
- कोटा महाराव भीमसिंह दक्षिण राजपूताना की रियासते कोटा, बूंदी, झालावाड़ को मिलाकर हाडौती संघ बनाना चाहते थे
- डूंगरपुर महारावल लक्ष्मण सिंह डूंगरपुर, बाँसवाड़ा, प्रतापगढ़ को मिलाकर वागड संघ बनाना चाहते थे

● **रियासते -**

सबसे प्राचीन रियासत	मेवाड
क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे बडी रियासत	मारवाड़
जनसंख्या की दृष्टि से सबसे बडी रियासत	जयपुर
सबसे छोटी रियासत	शाहपुरा
जाट रियासत	भरतपुर, धौलपुर
मुस्लिम रियासत	टोंक

- राज. का एकीकरण 7 चरणों मे पूरा हुवा

❖ **प्रथम चरण - मत्सय संघ - 18 मार्च 1948**

- अलवर–भरतपुर में मेव मुसलमानो ने अलग से मेवस्तान बनाने की माँग की इसमें अलवर नरेश तेजसिंह व इनके प्रधानमंत्री एन.वी खरे पर साम्प्रदायिक दंगे भडकाने का आरोप लगा तो भारत सरकार ने अलवर रियासत को अपने नियत्रंण में ले लिया

किसान व जनजाति आंदोलन

- ब्रिटिश आधिपत्य के बाद उँची लगान दरे, बढते खर्चो का किसानो पर बोझ, लाग–बाग, लाटा–कूंता व सामन्तो के अत्याचार से जनता परेशान थी

❖ बिजौलिया किसान आंदोलन (1897 - 1941 ई) –

- बिजौलिया (प्राचीन नाम – विजयावल्ली) मेवाड राज्य में प्रथम श्रेणी का ठिकाना था जो वर्तमान में भीलवाड़ा में है
- खानवा युद्ध में सांगा की सहायता जगनेर (उतरप्रदेश) के अशोक परमार ने की तब राणा सांगा ने अशोक परमार को बिजौलिया (उपरमाल) दे दिया
- बिजौलिया ठिकाने के संस्थापक – अशोक परमार थे
- बिजौलिया में परमार वंश का शासन था
- यहाँ धाकड जाति के किसान रहते थे
- 84 प्रकार के कर लिये जाते थे जैसे – लाटा कूंता (खडी फसल पर अनुमानित व फसल काटने के बाद लिया जाने वाला कर), बेगारी कर (बिना मजदूरी के काम करवाना)
- बिजौलिया किसान आंदोलन तीन चरणो में पूरा हुवा

चरण	अवधि	प्रमुख नेता
प्रथम चरण	1897–1915	साधु सीताराम दास, फतेहकरण चारण ब्रहमदेव, नाथूलाल, प्रेमचंद भील, नानजी–ठाकरी पटेल रामजीलाल सुनार
द्वितीय चरण	1916–1922	विजय सिंह पथिक, नारायण पटेल
तृतीय चरण	1923–1941	माणिक्यलाल वर्मा, नारायणी देवी वर्मा, रामनारायण चौधरी, अंजना देवी चौधरी, जमनालाल बजाज, रमा देवी

● प्रथम चरण (1897-1915 ई) –

- नेतृत्व – स्थानीय लोगों द्वारा किया गया
- 1897 में गिरधारीपुरा गाँव में गंगाराम धाकड के पिता की मृत्यू पर मृत्यु भोज (मौसर) में किसान एकत्रित हुए
- साधु सीताराम दास (जन्म – बिजौलिया में 1884 ई) ने कहा की हम बिजौलिया जागीरदार कृष्णसिंह परमार की शिकायत मेवाड महाराणा फतेहसिंह से करेगे
- नानजी और ठाकरी पटेल को मेवाड महाराणा फतेहसिंह के पास भेजा गया लेकिन कोई परिणाम नहीं निकला
- 1903 ई में जागीरदार राव कृष्णसिंह ने नया कर चंवरी कर (लडकी की शादी पर 5 रूपये कर) लगा दिया
- 1906 ई में कृष्ण सिंह की निःसंतान मृत्यु हो जाने पर पृथ्वीसिंह को नया जागीरदार बनाया गया जिसने तलवार बंधाई /उत्तराधिकारी कर लगाया, ये कर ताजपोशी होने पर जनता से वसूला जाता था
- 1914 में राव पृथ्वीसिंह की मृत्यू के बाद इनका पुत्र केसरी सिंह अल्पवयस्क होने से बिजौलिया का जागीरी प्रशासन कोर्ट ऑफ वार्डस (महाराणा) के नियंत्रण में चला गया

● द्वितीय चरण (1916 - 1922 ई) –

- 1914 में हरिभाई किंकर के साथ मिलकर विजय सिंह पथिक ने ओछडी गाँव (चितौड) में विधा प्रचारिणी सभा की स्थापना की, इस सभा के 1916 में चितौड़गढ़ सम्मेलन में साधु सीताराम दास के कहने पर विजय सिंह पथिक बिजौलिया किसान आंदोलन से जूडे
- 1916 में साधु सीताराम दास ने किसान पंच बोर्ड की स्थापना की व बिजौलिया के किसानो में जनजागृति के लिए मित्र मण्डल की स्थापना की

● उपरमाल पंच बोर्ड (किसान पंचायत) - 1917 ई

- स्थापना – विजय सिंह पथिक ने बैरीसाल गाँव में हरियाली अमावस्या के दिन की
- अध्यक्ष (सरपंच) – मन्ना पटेल
- उद्देश्य – किसानों को कर नहीं देने के लिए प्रेरित करना

● बिन्दूलाल भट्टाचार्य आयोग - 1919

- मेवाड सरकार ने बिन्दूलाल भट्टाचार्य (माण्डलगढ़ का हाकिम), ठाकुर अमरसिंह (बिजौलिया), अफजल अली (न्यायाधीश) कुल 3 सदस्य आयोग का गठन किया गया और इस आयोग को किसानो की शिकायतों की सुनवाई के लिए बिजौलिया भेजा गया
- इस आयोग ने किसानों की माँगों को सही बताया लेकिन आगे कोई कार्रवाई नहीं हुवी
- 1921 में महाराणा फतेहसिंह ने दूसरे जांच आयोग का गठन किया जिसमें मेहता तख्तसिंह, रमाकांत मालवीय, ठाकुर राजसिंह बेदला को नियुक्त किया
- विजय सिंह पथिक ने आन्दोलन से संबंधित खबरे कानपुर से निकलने वाले अखबार 'प्रताप' (सम्पादक – गणेश शंकर विद्यार्थी) में छपवायी

नोट – गणेश शंकर विद्यार्थी का जन्म प्रयागराज (U.P) में हुवा

प्रजामण्डल

- अर्थ – प्रजा का मण्डल / जनता की सरकार
- उद्देश्य – जनता के अधिकारों के लिए संघर्ष
- 1938 में कांग्रेस के हरिपुरा अधिवेशन की अध्यक्षता सुभाषचंद्र बोस ने की जिसमें देशी रियासतों में उतरदायी शासन की स्थापना के लिए प्रजामण्डल के गठन को समर्थन दिया गया

प्रजामण्डल	गठन वर्ष
जयपुर, बूँदी	1931
हाडौती, मारवाड	1934
बीकानेर, धौलपुर	1936
जयपुर प्रजामण्डल पुनर्गठन	1936
अलवर, भरतपुर, करौली	1938
शाहपुरा, मेवाड	1938
किशनगढ, सिरोही	1939
कुशलगढ	1942
बाँसवाडा	1943
डूँगरपुर	1944
प्रतापगढ, जैसलमेर	1945
झालावाड	1946

❖ जयपुर प्रजामण्डल आंदोलन –

- जयपुर में जनजागृति के जनक – अर्जुन लाल सेठी
- स्थापना – 1931 में जमनालाल बजाज व कर्पूरचन्द्र पाटनी (अध्यक्ष) के प्रयासों से

● जयपुर प्रजामण्डल का पुनर्गठन – 1936

- सेठ जमनालाल बजाज व हीरालाल शास्त्री के प्रयासों से पुनर्गठन किया गया
- अध्यक्ष – चिरंजीलाल मिश्र व महामंत्री – हीरालाल शास्त्री
- महिला नेता – रतना शास्त्री, रमा देवी देशपांडे, सुमित्रा देवी, इन्द्रा देवी, शारदा देवी, सुशीला गोयल
- 1938 में जयपुर प्रजामण्डल का प्रथम अधिवेशन हुवा जिसकी अध्यक्षता जमनालाल बजाज ने की
- 1940 में हीरालाल शास्त्री जयपुर प्रजामण्डल अध्यक्ष बने

● जेन्टिलमेन्स एग्रीमेंट – 1942

- जयपुर प्रजामण्डल के अध्यक्ष हीरालाल शास्त्री व जयपुर के प्रधानमंत्री मिर्जा इस्माइल के मध्य हुवा
- इसके अनुसार जयपुर राज्य भविष्य में अंग्रेजों की मदद नही करेगा व राज्य में उत्तरदायी शासन की स्थापना होगी
- इस समझौते के बाद जयपुर प्रजामण्डल ने भारत छोड़ो आंदोलन (1942) में भाग नही लिया

● आजाद मोर्चा – 1942

- प्रजामण्डल के कुछ कार्यकर्ता राष्ट्रीय आंदोलन में भाग लेना चाहते थे इसलिए उन्होने आजाद मोर्चा दल बनाया
- आजाद मोर्चा की स्थापना बाबा हरिश्चंद्र (प्रमुख नेता) ने रामकरण जोशी, दौलतमल भण्डारी, गुलाबचन्द कासलीवाल, हंस डी राय के सहयोग से की
- 1944 के जयपुर प्रजामण्डल के अधिवेशन की अध्यक्षता जानकी देवी बजाज ने की

> 1933 में कलकता मे आयोजित अखिल भारतीय मारवाडी महिला सम्मेलन की अध्यक्षता भी जानकी देवी बजाज ने की

❖ जोधपुर प्रजामण्डल –

- 1918 में चांदमल सुराणा ने मरूधर हितकारिणी सभा की स्थापना की, 1923 में जयनारायण व्यास ने इसका पुनर्गठन कर इसका नाम मारवाड हितकारिणी सभा रखा
- 1920 राजस्थान सेवा संघ की तर्ज पर जयनारायण व्यास ने मारवाड सेवा संघ का गठन किया
- जयनारायण व्यास की दो लिखित पुस्तके – मारवाड की अवस्था और पोपा बाई री पोल प्रकाशित की गई जिसमें मारवाड सरकार की आलोचना की गई
- 1931 में जयनारायण व्यास ने मारवाड यूथ लीग की स्थापना की

● जोधपुर प्रजामण्डल की स्थापना – 1934

- स्थापना – जयनारायण व्यास ने की
- अध्यक्ष – भंवरलाल सर्राफ
- सहयोगी – आंनदराज, मथुरादास माथुर, छगनराज
- 1934 में मारवाड राज्य ने मारवाड पब्लिक सोसाइटी आर्डिनेंस जारी किया जिसमें नागरिकों पर अधिक प्रतिबंध लगाये गये

● कृष्णा दिवस – 1936

- कृष्णा नामक विधवा महिला का राजघराने के व्यक्ति ने अपहरण कर लिया था इसके विरोध में मारवाड प्रजामण्डल ने कृष्णा दिवस मनाया

● शिक्षा दिवस – 1936

- मारवाड सरकार ने शिक्षा शुल्क में वृद्धि कर दी थी इसलिए 21 जून 1936 को शिक्षा दिवस मनाया गया

राजनीतिक संस्था, समाचार पत्र

❖ प्रताप सभा - उदयपुर - 1915
- इस सभा ने हल्दीघाटी मेले का आयोजन तथा प्रताप जंयती मनाने की शुरूआत की
- बंलवत सिंह मेहता वर्षो तक इसके संचालक रहे

❖ राजपूताना मध्य भारत सभा - 1918
- जमनालाल बजाज के प्रयासो से दिल्ली के चाँदनी चौक में स्थित मारवाडी पुस्तकालय में इसका प्रथम अधिवेशन हुवा
- संस्थापक – जमनालाल बजाज (अध्यक्ष), गणेश शंकर विद्यार्थी (उपाध्यक्ष), विजय सिंह पथिक
- कार्यालय – कानपुर व राजस्थान में मुख्यालय – अजमेर
- दूसरा अधिवेशन दिसम्बर 1919 को अमृतसर में, तीसरा अधिवेशन मार्च 1920 को जमनालाल बजाज की अध्यक्षता में अजमेर में हुवा
- चौथा अधिवेशन दिसम्बर 1920 में नागपुर में हुवा
- उद्देश्य – जनता में राजनैतिक चेतना का विकास करना

❖ राजस्थान सेवा संघ -
- स्थापना – 1919 वर्धा (महाराष्ट्र)
- संस्थापक – विजयसिंह पथिक, रामनारायण चौधरी हरिभाई किंकर, केसरीसिंह बारहठ
- उद्देश्य – जनता की समस्याओं का निराकरण करना तथा राजा – प्रजा में मधुर संबंध बनाना
- 1920 में अजमेर स्थानांतरण किया गया

❖ मारवाड़ सेवा संघ - जोधपुर - 1920
- स्थापना – जयनारायण व्यास + चांदमल सुराणा
- अध्यक्ष – दुर्गाशंकर, मंत्री – प्रयागराज भंडारी

❖ अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद - 1927
- प्रथम अधिवेशन – 16 व 17 दिसम्बर 1927 को बम्बई में
- अध्यक्ष – दीवान बहादुर रामचंद्र राव
- उपाध्यक्ष – विजय सिंह पथिक
- उद्देश्य– उतरदायी शासन की स्थापना करना

❖ राजपूताना देशी राज्य परिषद - अजमेर - 1928
- स्थापना – विजय सिंह पथिक + रामनारायण चौधरी
- प्रथम अधिवेशन – 1928 को अजमेर में
- सभापति – अमृतलाल सेठ

❖ मित्र मण्डल - बिजौलिया
- साधु सीताराम दास ने बिजौलिया किसानो में जागृति के लिए इसकी स्थापना की

प्रमुख सामाजिक संस्थाएँ

❖ देश हितैषिणी सभा - उदयपुर
- 2 जुलाई 1877 को महाराणा सज्जनसिंह की अध्यक्षता में उदयपुर में स्थापित
- उद्देश्य– विवाह संबंधित कठिनाइयों का समाधान करना
- राजपूतो के विवाह अवसर पर खर्च कम करने के लिए नियम बनाये गये थे

❖ वाल्टर कृत राजपूत हितकारिणी सभा - 1888-89
- राजपूताना के ए.जी.जी कर्नल वाल्टर ने राजपूताना के शासक वर्ग में फैली सामाजिक बुराईयो को दूर करने के लिए अजमेर में सभी रियासतो के प्रतिनिधि बुलाए व 1888 में इस सभा की स्थापना की
- 22 फरवरी 1889 में अजमेर में इस सभा का नाम 'वाल्टरकृत राजपूत हितकारिणी सभा' रखा गया व सुधारात्मक कार्य करने के प्रयास किये जैसे – बहुविवाह को समाप्त करे, त्याग प्रथा व मृत्यू भोज को बंद करे, विवाह की आयु बढाये

❖ सर्वहितकारिणी सभा - चूरु
- 1907 में स्वामी गोपालदास + कन्हैयालाल द्वारा स्थापित
- राजनैतिक कार्यों के कारण चूरू की कांग्रेस कहलायी
- नारी शिक्षा के लिए पुत्री पाठशाला व हरिजनो को शिक्षित करने के लिए कबीर पाठशाला की स्थापना की

❖ जीवन कुटीर - वनस्थली - 1929
- हीरालाल शास्त्री ने जीवन कुटीर की स्थापना वनस्थली (निवाई – टोंक) में की
- उद्देश्य – ग्राम सेवा ग्रामोत्थान व जनसेवा

❖ शिक्षा कुटीर / वनस्थली विद्यापीठ - 1935
- हिरालाल शास्त्री व रतना शास्त्री की पुत्री शांताबाई के निधन पर 6 अक्टूबर 1935 को शिक्षा कुटीर की स्थापना की जो बाद में वनस्थली विद्यापीठ (निवाई – टोंक) के रूप में विकसित हुवी
- उद्देश्य – छात्राओं की शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए

❖ राजस्थान हरिजन सेवा संघ - अजमेर - 1934
- 1932 में घनश्याम दास बिडला की अध्यक्षता में अखिल भारतीय हरिजन सेवा संघ स्थापित हुवा
- बिडला ने अजमेर में हरविलास शारदा को हरिजन सेवा संघ की राजपूताना शाखा का अध्यक्ष मनोनीत किया

राजस्थान के क्रांतिकारी

❖ अर्जुनलाल सेठी –

- जन्म – 1880 में जयपुर के जैन परिवार में
- जयपुर में जनजागृति के जनक कहलाते है
- रास बिहारी बोस ने राज. में सशस्त्र क्रांति की जिम्मेदारी अर्जुनलाल सेठी को दी थी
- चौमू ठाकुर देवीसिंह के निजी सचिव के रूप में अपने कैरियर की शुरुआत की
- जयपुर शासक माधोसिंह द्वितीय ने सेठी जी को जयपुर राज्य का प्रधानमंत्री बनने को कहा तब इन्होंने कहा – सेठी नौकरी करेगा तो अंग्रेजों को कौन निकालेगा

● जैन वर्धमान विधालय –

- अर्जुन लाल सेठी ने 1905 ई में जयपुर में जैन शिक्षा प्रचारक समिति की स्थापना की
- 1907 में जैन शिक्षा सोसायटी नाम से अजमेर में स्थापित की व 1908 में जैन वर्धन पाठशाला नाम से जयपुर में स्थानांतरित की गई
- उद्देश्य – युवाओं को क्रांतिकारी बनाना
- जोरावर सिंह, प्रतापसिंह बारहठ, माणिकचन्द, मोतीचन्द, जयचंद, विष्णुदत इसी विद्यालय से जुड़े हुए थे

● निमेज हत्याकांड - 1913

- निमेज गाँव – आरा जिला (बिहार) में माणकचन्द, मोतीचन्द, जयचन्द, जोरावर सिंह ने धन के लिए मंहत भगवानदास की हत्या कर दी जिनमें मोतीचन्द को मृत्यूदण्ड व विष्णुदत को आजीवन कारावास मिला
- जोरावर सिंह को प्राणदण्ड मिला था लेकिन वह पकड़े नहीं जा सके
- सबूत के अभाव में सेठी जी गिरफतार नही हुए फिर भी उन्हें वैलूर जेल (तमिलनाडु) में 5 वर्ष तक नजरबंद रखा
- वैलूर जेल में अर्जुन लाल सेठी ने 70 दिन का अनशन किया जो देश के राजनीतिक इतिहास में पहला अनशन माना जाता है
- जेल से लौटते समय बाल गंगाधर तिलक ने पूना स्टेशन पर सेठी जी का जोरदार स्वागत किया
- बारदौली (गुजरात) में सरदार वल्लभ भाई पटेल के नेतृत्व में इनके शिष्यों ने बग्घी में घोडो के स्थान पर स्वयं बग्घी खीचंकर सेठी जी को पूरे शहर में घूमाया
- अंतिम समय में सेठी जी अजमेर में रहे, यहाँ मुस्लिम बच्चों को अरबी सिखाते थे व अपना नाम करीम खान रख लिया
- हिन्दू – मुस्लिम एकता स्थापित करने का प्रयास किया था
- पं. सुन्दरलाल बहुगुणा ने इनकी मृत्यु पर कहा – दधीचि जैसा त्याग और दृढता लेकर वे जन्मे थे और उसी दृढता से उन्होंने मृत्यु को गले लगाया
- अजमेर में सेठी जी ने शूद्र मुक्ति, स्त्री मुक्ति, महेन्द्र कुमार, मदन पराजय, पार्श्व यज्ञ आदि पुस्तकें लिखी
- सेठी जी काकौरी ट्रेन डकैती (9 अगस्त 1925) में अशफाक उल्ला खां को शरण देने, हार्डिग बम काण्ड से संबंधित थे

❖ केसरीसिंह बारहठ –

- जन्म – 1872 में देवपुरा (शाहपुरा)
- भाई – जोरावरसिंह बारहठ
- पुत्र – प्रतापसिंह बारहठ
- राजनीतिक गुरू – मैजिनी (इटली के राष्ट्रपिता)
- 1903 में वायसराय लार्ड कर्जन ने एडवर्ड सप्तम के राज्यारोहण का दिल्ली में दरबार लगाया था तब केसरीसिंह बारहठ ने डिंगल भाषा में 13 सोरठे ' चेतावनी रा चूंगट्या ' लिखकर गोपाल सिंह खरवा के हाथो भिजवाये व मेवाड महाराणा फतेहसिंह को दरबार में जाने से रोका था
- 1910 में केसरीसिंह जी ने वीर भारत सभा की स्थापना गोपाल सिंह खरवा के सहयोग से की

नोट – वीर भारत समाज के संस्थापक – विजय सिंह पथिक

● साधु प्यारेलाल हत्याकांड - 1912

- जोधपुर के धनी साधु प्यारेलाल को कोटा लाया गया और इनकी हत्या कर दी जिसके लिए इनको हजारी बाग जेल (झारखंड) भेजा गया व 20 वर्ष की सजा हुवी
- सहयोगी – सोमदत लाहडी, रामकरण, हीरालाल जालौरी, हीरालाल लाहिरी
- अपने पुत्र प्रतापसिंह की शहादत पर कहा – भारत माता का पुत्र उसकी आजादी के लिए शहीद हो गया
- केसरीसिंह बारहठ को योगीपुरूष व राजस्थान केसरी भी कहा जाता है
- रास बिहारी बोस ने कहा – एकमात्र बारहठ परिवार है जिसने भारत माता को आजाद कराने के अपने पूरे परिवार को स्वतंत्रता के युद्ध में झोंक दिया

- **प्रमुख रचनाएँ –** रूठी रानी चरित्र, प्रताप चरित्र, दुर्गादास चरित्र, जसवंत चरित्र, राजसिंह चरित्र
- केसरीसिंह का अंतिम समय कोटा के माणक महल में बिता

❖ गोपाल सिंह खरवा –

- अजमेर – मेरवाडा मे खरवा ठिकाने के जागीरदार थे
- प्रथम विश्वयुद्व के दौरान रास बिहारी बोस व सचिन्द्रनाथ सान्याल ने सशस्त्र क्रांति की योजना तैयार की, राव गोपालसिंह इस योजना से जुड गये थे
- इनको 4 साल तक टाडगढ किले में बंद रखा गया, वहाँ से भागने पर इनको तिहाड जेल में रखा गया था
- ये आर्य समाज के सिद्धांतों से प्रभावित थे
- 1989 में इनके सम्मान में डाक टिकट जारी किया गया

❖ प्रताप सिंह बारहठ –

- जन्म – 1893 ई – शाहपुरा (भीलवाडा)
- **हार्डिंग बम काण्ड –**
- प्रतापसिंह बारहठ ने अपने चाचा जोरावर सिंह बारहठ के साथ मिलकर 23 दिसम्बर 1912 को दिल्ली के चाँदनी चौक में स्थित पंजाब नेशनल बैंक की ईमारत पर पहुँचकर भारत के गवर्नर जनरल लार्ड हार्डिग पर बम फेंका, लेकिन हार्डिग बच गया
- प्रतापसिंह बारहठ को हार्डिग बम काण्ड में गिरफतार किया गया लेकिन सबूत के अभाव में छोड दिया
- बनारस षडयन्त्र केस में प्रतापसिंह बारहठ को पकडकर 5 वर्ष के लिए बरेली जेल में डाल दिया गया
- अग्रेंज अधिकारी क्लीवलैंड ने इनको घोर यातना दी और कहा कि तुम्हारी माँ तुम्हारे लिए रोती है इस पर प्रताप सिंह बारहठ ने कहा – मेरी माँ को हसाने के लिए मैं हजारो माताओं को नहीं रूला सकता
- बरेली जेल में यातनाओं के कारण इनकी मृत्यु हो गयी

❖ जोरावर सिंह बारहठ –

- जन्म – 1883 ई – उदयपुर
- अंग्रेजों के कभी हाथ नहीं आये, इसलिए इन्हें राजस्थान का चन्द्रशेखर कहा जाता है
- इन्होंने अपना नाम अमरदास वैरागी रख लिया था और अंतिम समय में मालवा – वागड की तरफ घूमते रहे

❖ सेठ दामोदर दास राठी –

- जन्म – पोकरण (जैसलमेर)
- कर्मभूमि– ब्यावर
- 1889 ई में ब्यावर में राज. की प्रथम सूती वस्त्र मिल 'द कृष्णा मिल' की स्थापना की
- सहस्त्र क्रांति का भामाशाह कहते है
- 1916 में ब्यावर में होमरूल लीग की स्थापना की
- ब्यावर में सनातन धर्म व नवभारत विधालय की स्थापना की

❖ विजय सिंह पथिक –

- जन्म – 1882 में गुठावली गाँव (बुलन्दशहर– U.P)
- मूल नाम – भूपसिंह गुर्जर
- रास बिहारी बोस के कहने पर पथिक जी राज. में गोपालसिंह खरवा के पास आये
- वीर भारत समाज, विद्या प्रचारिणी सभा, सेवा समिति की स्थापना की व साधु सीताराम दास के साथ मिलकर अखाडा स्थापित किया
- सशस्त्र विद्रोह में भाग लेने पर अंग्रेजों ने इनको टाडगढ दुर्ग में बंदी बनाकर रखा
- महात्मा गाँधी ने कहा – लोग सिर्फ बाते करते है लेकिन पथिक सिपाही की तरह काम करता है
- **प्रमुख रचना –**
- पथिक विनोद, पथिक प्रमोद, अजयमेरू (उपन्या स)

❖ सेठ जमनालाल बजाज –

- जन्म – 1889 को काशी का बास (सीकर)
- उपनाम – राजस्थान का भामाशाह
- स्वयं को खुद को गुलाम नं 4 कहते थे
- 1920 के नागपुर अधिवेशन में इनको गाँधीजी के पाँचवे पुत्र की संज्ञा दी गई
- अंग्रेजों ने इनको रायबहादुर की उपाधि दी थी जो इन्होंने असहयोग आंदोलन में वापस लोटा दी
- गाँधी जी के 'नवजीवन' हिन्दी समाचार पत्र और विजय सिंह पथिक के 'राजस्थान केसरी' समाचार पत्र को आर्थिक सहायता प्रदान की
- 1927 में जयपुर में चरखा संघ की स्थापना की

❖ ज्वाला प्रसाद शर्मा –

- 1931 में अजमेर में हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन का गठन किया
- अजमेर के पुलिस उप अधीक्षक प्राणनाथ डोगरा को मारने की योजना बनाई जिसे डोगरा काण्ड कहते है

❖ हरिभाऊ उपाध्याय –

- जन्म – 1893 को भौरासा गाँव (ग्वालियर– M.P)
- उपनाम – दा साहब
- समाचार पत्र – ओदुम्बर (काशी), नवजीवन (अजमेर)
- त्यागभूमि समाचार पत्र का प्रकाशन 1927 में अजमेर से शुरू किया, इसका प्रत्येक अंक 64 पृष्ठ का होता था जिसमें

सभ्यता

- भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग (मुख्यालय – नई दिल्ली) की स्थापना अलेक्जेन्डर कंनिघम के नेतृत्व में 1861 में हुई
- 1902 ई में जान मार्शल ने इसका पुनर्गठन किया

- राजस्थान में पुरातात्विक सर्वेक्षण कार्य सर्वप्रथम 1871 ई में ए.सी.एल. कार्लाइल द्वारा प्रांरभ किया गया इन्होंने दौसा में पाषाण व मानव हड्डियो की सूचना दी
- राजस्थान पुरातत्व व संग्रहालय विभाग की स्थापना 1950 में जयपुर में की गई

❖ बागौर सभ्यता –

- बागौर (भीलवाडा) मे कोठारी नदी तट पर
- **उत्खनन** – 1967 में वीरेन्द्रनाथ मिश्र व डॉ. एल.एस.लेशिन
- उत्खनन स्थल महासतियॉं का टिल्ला कहलाता है
- भारत में सर्वप्रथम कृषि व पशुपालन के प्राचीनतम साक्ष्य बागौर सभ्यता से प्राप्त हुए
- बागौर को आदिम संस्कृति का संग्रहालय भी कहते है
- लघु पाषाण उपकरण प्राप्त हुए है
- मध्य पाषाणकालीन सभ्यता स्थल है
- कंकाल के गले में पत्थर व हड्डियो का हार पाया गया है
- ताबें के उपकरण भी मिले है जिनमें छेद (छिद्र) वाली सूई महत्वपूर्ण है ।

❖ कालीबंगा सभ्यता –

- हनुमानगढ जिला मुख्यालय से दक्षिण पश्चिम में स्थित
- प्राचीन दृषदृती और सरस्वती नदी (वर्तमान – घग्घर नदी) क्षेत्र में विकसित सभ्यता
- खुदाई के दौरान मिली काली चूडियो के कारण इसका नाम कालीबंगा पडा
- सर्वप्रथम जानकारी दी – एल.पी.टैस्सीटोरी
- **खोज** – 1952 में अमलानन्द घोष ने (भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के तत्कालीन महानिदेशक)
- **उत्खनन** – 1961–1969 के मध्य बी.बी.लाल, बी.के.थापर, एम.डी.खरे, के.एम.श्रीवास्तव, एस.पी.जैन द्वारा
- स्वतंत्र भारत की खोजी गयी प्रथम सभ्यता
- सिंधु सभ्यता / हडप्पा सभ्यता / कांस्ययुगीन सभ्यता कहा जाता है
- सिन्धु सभ्यता का महत्वपूर्ण केन्द्र था
- समय – 2400 – 2250 ई.पूर्व की संस्कृति
- उत्खनन कार्य पाँच स्तरो पर किया गया, प्रथम दो स्तर तो हडप्पा सभ्यता से भी प्राचीन है
- कालीबंगा की सभ्यता को दो भागो में बाँटा गया
  (1) प्राक् हडप्पा सभ्यता (2) हडप्पा सभ्यता

> नोट – पाकिस्तान में कोट दीजी स्थान से कालीबंगा से हडप्पा पूर्व की सभ्यता से मिलते जुलते अवशेष मिले है

- खुदाई से प्राप्त सामग्रीयों को रखने के लिए 1985–86 में कालीबंगा संग्रहालय की स्थापना की
- खिलौना बैलगाडी, लकडी की नालियाँ, चबूतरे जिन पर 7 अग्निकुण्ड (वेदिकाएँ) बने है, भूंकप आने के प्राचीनतम साक्ष्य, मकान मिट्टी की ईटों के बने, समकोण पर काटती सडके, छत लकडी की बनी, तंदूर के साक्ष्य, घरो में अण्डाकार कुँए मिले है
- यहाँ टीले पर दुर्ग की किलेबंदी (दोहरी रक्षा प्राचीर) के अवशेष मिलने के कारण डॉ. दशरथ शर्मा ने कालीबंगा सभ्यता को सिंधु घाटी सभ्यता की तीसरी राजधानी कहा
- मिट्टी के बर्तन (मृदभाण्ड) मिले है जिनका रंग लाल है, जिन पर काली व सफेद रंग की रेखा खीचीं गई है
- कालीबंगा की लिपि सिंधु लिपि के समान थी जिसे दायें से बायें लिखा जाता था
- दक्षिण – पूर्व दिशा में जूते हुए खेत के प्रमाण मिले है
- एक साथ दो फसल (गेंहू–जौ) के प्रमाण मिले है
- चना, बाजरा, सरसों के भी प्रमाण मिले है
- नगरीय सभ्यता थी

- मिट्टी की बेलनाकार मोहरे प्राप्त हुवी थी जो मेसोपोटामिया सभ्यता (ईरान) से मिलती जुलती है
- मिट्टी की वृषभाकृति (बैल), हाथी दांत का कंघा, ऊँट की हडिड्यो के साक्ष्य, पत्थर के बने तोलने के बाट, गाय के मुख वाले प्याले, ताबें के बैल, कास्य के दर्पण, काँच की मणिया मिली है
- षल्य चिकित्सा के प्रमाण मिले है (बच्चे के कंकाल की खोपडी में 6 छेद मिले है)

पुरातात्विक स्त्रोत

प्रमुख शिलालेख

❖ बडली का शिलालेख (443 ई.पूर्व) – भिनाय (अजमेर)

- राज. का सबसे प्राचीनतम अभिलेख बडली के पास भिलोट माता मंदिर से प्राप्त हुवा है
- ब्राही लिपि में उत्कीर्ण है।

❖ घोसुण्डी शिलालेख (द्वितीय शताब्दी ईसा पूर्व)

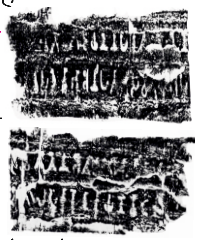

- घोसुण्डी गाँव (चित्तौडगढ) से प्राप्त हुवा है
- राजस्थान में भागवत् / वैष्णव सम्प्रदाय से संबधित सर्वाधिक प्राचीन अभिलेख है
- इसकी भाषा संस्कृत और लिपि ब्राह्यी है
- वासुदेव के पूजा गृह के चारो ओर पत्थर की चारदीवारी बनाने और गजवंश के सर्वतात द्वारा अश्वमेघ यज्ञ करने का उल्लेख है।

❖ बडवा यूप अभिलेख (238 ई) – बडवा गाँव (कोटा)

- तीन यूप लेख मिले है।
- मौखरी वंश के शासको का वर्णन मिलता है
- मौखरी महासेनापति बल के तीन पुत्रो के यज्ञ संपादन का उल्लेख है।

❖ बरनाला अभिलेख (278 ई) – जयपुर

- भगवान विष्णु (वैष्णव सम्प्रदाय) की वंदना की गई है।

❖ अपराजित का शिलालेख (661 ई) – नागदा (उदयपुर)

- रचयिता – दामोदर
- मेवाड के गुहिल शासक अपराजित की जानकारी है

❖ मंडोर शिलालेख (685 ई) – जोधपुर

- मंडोर के गुर्जर–प्रतिहार वंश की जानकारी देता है

नोट – मंडोर का दूसरा शिलालेख 837 ई में गुर्जर प्रतिहार नरेश बाउक ने उत्कीर्ण कराया था

दस्तुर कौमवार (32 खण्ड में) जयपुर राज्य के अभिलेखो की श्रृंखला है जिनमें जयपुर रियासत की जानकारी मिलती है

❖ मानमोरी अभिलेख (713 ई) –

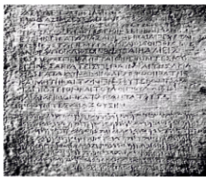

- चितौड की प्राचीन स्थिति व मोरी वंश (चित्रागंद मौर्य का उल्लेख) की जानकारी मिलती है।
- चितौड के पास मानसरोवर झील के तट पर कर्नल जेम्स टॉड को मिला था
- कर्नल जेम्स टॉड इग्लैण्ड जा रहे थे तब भारी होने के कारण इसे समुन्द्र में फेंक दिया

❖ बचुकला अभिलेख (815 ई) –

- बिलाडा के पास बचुकला गाँव (जोधपुर) से प्राप्त
- प्रतिहार शासक वत्सराज के पुत्र नागभट्ट के काल का है

❖ घटियाला शिलालेख (861 ई) – घटियाला (फलौदी)

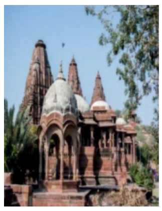

- मंडोर के प्रतिहार वंश की उत्पति का उल्लेख
- प्रतिहार वंश के राजा हरिशचन्द्र और उनके उतराधिकारियों का वर्णन है।
- यह शिलालेख कुक्कुक के समय संस्कृत व प्राकृत भाषा में लिखा गया
- मग जाति के ब्राह्मणों व जैन मंदिर के निर्माण का उल्लेख है

❖ नाथ प्रशस्ति –

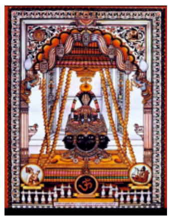

- रचयिता– वेदांग मुनि के शिष्य आम्र कवि है
- उदयपुर के लकुलिश मंदिर में लगे शिलालेख को नाथ प्रशस्ति कहा जाता है
- संस्कृत भाषा में मेवाड का इतिहास है।

❖ हर्षनाथ की प्रशस्ति (973 ई) – हर्षनाथ (सीकर)

- चौहान शासक विग्रहराज द्वितीय के समय की है
- हर्षनाथ मंदिर का निर्माण अल्लट द्वारा किये जाने का वर्णन मिलता है
- चौहान शासको की जानकारी, पाशुपत सम्प्रदाय से संबधित गुरू विश्वरूप का उल्लेख मिलता है

❖ बिजौलिया अभिलेख (1170 ई) –

- जैन श्रावक लोलाक द्वारा यह लेख बिजौलिया (भीलवाडा) के पार्श्वनाथ मंदिर में एक चट्टान पर उत्कीर्ण कराया गया

मध्यकालीन प्रशासनिक राजस्व व्यवस्था

❖ सामन्ती व्यवस्था –

- सम्पूर्ण शासन व्यवस्था का केन्द्र राजा होता है
- बडा भाई राजा बनता था
- प्रशासनिक, न्याय, सैनिक शक्तियाँ राजा के पास होती थी
- राजा अपने भाईयो को जागीर देता था, जागीर का मालिक सामन्त कहलाता था
- राजस्थान की प्रशासनिक व्यवस्था सामन्ती व्यवस्था पर टिकी थी
- जागीरो पर वंशानुगत अधिकार होता था।

❖ राज्य के प्रशासनिक अधिकारी –

● प्रधान / प्रधानमंत्री –

- राजा के बाद सबसे महत्वपूर्ण अधिकारी
- शासन, सैनिक, न्याय कार्यो में राजा की सहायता करता
- इसे मुख्यमंत्री / मंत्रीप्रवर कहते थे।
- जयपुर रियासत के प्रधानमंत्री को मुसाहिब तथा कोटा व बूंदी में फौजदार / दीवान कहा जाता था

● दीवान –

- राजा को आर्थिक, वित, राजस्व संबधी जानकारी देना
- राजा के बाहर जाने पर राज्य संभाले उसे देश दीवान कहते थे
- दीवान अर्थ विभाग का अध्यक्ष होता था
- इसके दफतर दीवान – ए – हजूरी में सब कागजात सुरक्षित रहते थे
- इसके दफतर में एक महकमा–ए–बकायात भी होता था जो बकाया की वसूली, अच्छी फसल के समय शेष राजस्व वसूलता था।

● बख्शी – सेना विभाग का अध्यक्ष होता (रक्षामंत्री)

● अक्षपटलिक –

- राज्य में आय–व्यय का ब्यौरा रखने वाला अधिकारी

● मीर मुंशी –

- कूटनीतिक पत्र व्यवहार करने वाला अधिकारी

● खरीता – राजा द्वारा अन्य राजाओ को पत्र लिखना

● रूक्का – राजा द्वारा सामन्तो को पत्र लिखना

● किलेदार – किले की देख–रेख करता था

● नैमित्तिक – राजकीय ज्योतिष था

❖ सामन्तो द्वारा दिये जाने वाले कर –

● रेख – भू राजस्व कर था जो दो प्रकार का था

(1) पट्टा रेख – अनुमानित वार्षिक आय

(2) भरतु रेख – वास्तविक आय

● उतराधिकारी शुल्क –

- मेवाड में इसे कैद खालसा, तलवार बंधाई या नजराना तथा मारवाड में इसे पेशकशी व हुक्मनामा कहा जाता था।
- जैसलमेर रियासत में यह कर नहीं था

● गनीम बराड – युद्व के समय लिया जाने वाला कर

● नजराना – त्योंहार, उत्सवों पर राजा को भेंट देना

❖ भू राजस्व व्यवस्था –

● खालसा – जो भूमि सीधी राजा के अधीन हो

● जागीर – सामन्तो के अधीन हो

- जागीर फारसी शब्द है

● भोम – भोमियो के अधीन लगान मुक्त भूमि

- राजा उनको भोमिया की उपाधि देता था जो वीरता से युद्व करते हुए बलिदान होते थे

● इजारा भूमि – इसे ठेका प्रणाली / आकबन्दी कहते थे।

- बीकानेर में इसे 'मुकता' के नाम से जानते थे

● साद प्रथा – मेवाड में किसानो से लगान अदायगी के लिए महाजन से आश्वासन लिया जाता था

जनपद एवं प्राचीन नाम

- **यौधेय क्षेत्र**– गंगानगर, हनुमानगढ़
  - राज. के उत्तरी भाग में यौधेय एक शक्तिशाली कबीला था
  - राजस्थान में कुषाण शक्ति को नष्ट करने में सफल रहे
  - बृहत्संहिता (रचयिता–वराहमिहिर) में पतन की चर्चा है

- **मारवाड़** – जोधपुर के आसपास का क्षेत्र
  – मरू प्रदेश (प्राचीन नाम)

- **राजस्थान ब्रज क्षेत्र** – भरतपुर + धौलपुर + करौली + सवाई माधोपुर का क्षेत्र

- **मालव जनपद** – टोंक
  - सिंकदर के आक्रमण के समय मालव जयपुर की तरफ आये थे, अपनी शक्ति का केंद्र मालवनगर बसाया जिसे अब कर्कोटनगर (उनियारा – टोंक) नाम से जानते हैं
  - कर्कोटनगर को मालवों ने अपनी राजधानी बनाया
  - मालवों ने सम्राज्य विस्तार के लिए पुष्कर के भदो पर आक्रमण किया तो शक क्षत्रप 'नहपान' ने मालवों को पराजित किया
  - मालवों की विजय का अभिलेख– नांदसा (भीलवाड़ा)
  - राज. में मालव जनपद के सर्वाधिक सिक्के प्राप्त हुए हैं

- **मालवा क्षेत्र** – इंदौर+ झाबुआ + नीमच + रतलाम + मंदसौर (मध्यप्रदेश) व प्रतापगढ़ + झालावाड़
  - प्राचीन काल में यह क्षेत्र अवन्ति था जिसका उल्लेख 16 महाजनपदों में है
  - इसके दो भाग थे उत्तरी अवन्ति व दक्षिणी अवन्ति

- **मत्स्य जनपद** – जयपुर + अलवर + भरतपुर का क्षेत्र
  - सर्वप्रथम उल्लेख – ऋग्वेद में मिलता है
  - महाभारत काल में इसकी राजधानी विराटनगर (बैराठ) थी, यहाँ पर पांडवों ने अज्ञातवास बिताया था
  - मत्स्य जनपद के शासक विराट ने विराटनगर बसाया
  - इसका वर्णन चीनी यात्री युवानच्वांग ने भी किया है
  - शतपथ ब्राह्मण (रचयिता – याज्ञवल्क्य) में भी उल्लेख है
  - बौद्ध ग्रंथ अंगुतर निकाय (रचयिता – आनंद कोसलायन) से हमें 16 महाजनपदों की सूची मिलती है, उनमें मत्स्य जनपद राजस्थान में था

> राजस्थान के अनेक भाग कुरू, शूरसेन, अवन्ति (उत्तरी अवंति की राजधानी उज्जयिनी तथा दक्षिणी अवंति की राजधानी महिष्मती थी इन दोनों के मध्य नेत्रावती नदी बहती थी) महाजनपदों के अंतर्गत आते थे

- **कुरू महाजनपद** – अलवर का उतरी भाग
  - राजधानी – आधुनिक दिल्ली (इन्द्रप्रस्थ) थी

- **शूरसेन महाजनपद** –
  - भरतपुर + धौलपुर + करौली का क्षेत्र
  - राजधानी – मथुरा
  - बयाना प्रशस्ति में शूरसेन राजवंश का वर्णन मिलता है
  - चौथी शताब्दी ई.पूर्व के यूनानी लेखको ने सिंकदर के समय इस जनपद का उल्लेख किया है

- **अर्जुनायन** – अलवर + भरतपुर का क्षेत्र
  - अर्जुनायनों ने मालवो के साथ मिलकर विदेशी क्षत्रपो को परास्त किया

- **जम्बुख-रण**
  - केशोरायपाटन (आश्रम पट्टन – बूंदी) में जम्बुख (रीछों) की भरमार थी इसलिए इसे जम्बुख रण कहते थे

- **ब्रह्मवर्त** –
  - भारत में सरस्वती और द्रिषद्वति नदियों के बीच का क्षेत्र
  - मनुस्मृति में वर्णन
  - महाभारत में विनाशन / विनशन नामक स्थान पर सरस्वती नदी के लुप्त होने का उल्लेख है

> नोट – दृषद्वती को आज यमुना कहा जाता है
> सरस्वती नदी का वर्णन ऋग्वेद में है

- **ब्रजनगर** – झालरापाटन (झालावाड़)
  - सिटी ऑफ बेल्स (घटियों का शहर) – झालरापाटन

- **गुर्जरात्रा** – गुर्जर प्रतिहार ने शासन किया
  - जोधपुर का दक्षिणी भाग + भीनमाल (जालौर)

NOTES

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....